समाद

मैथिली में पहिल इ-पेपर

● पटना, 7 सितंबर,2008 ● साप्ताहिक ● अंक- 10 ● साल-1 ● इनटरनेट संस्करण

काहिल तंत्र पर प्रबंधनक जिम्मा

बिहारक इतिहासक सबस पैघ पुरर्वास कार्यक्रम अगिला मास स शुरू भ रहल अछि। मुख्यमंत्री नीतीश कुमार अपन काहिल तंत्र स एहि कार्यक्रम सफलताक उम्मीद केने छथि। एकटा आओर गौतम गोस्वामी क जन्म लेल बिहार तैयार नहि अछि। बांध टूटलाक छह दिन तक सेना आदेशक बाट तकैत रहल। राहत शिविर मे लोक लेल भोजन आ जलक इंतजाम लेल आवंटित टका स झालर खरीद भेल। मंत्री लेल फीता आ कैची खरीद भेल आ हजारों टका मात्र उद्घाटन समारोह मे खर्च भ गेल। सवाल उठैत अछि जे करोड़ क करोड़ टका जे देश-विदेश स बिहार पहुंच रहल अछि ओ कि एकटा और गौतम गोस्वामीक जन्मक कारण बनत? नीतीश कुमार स इ यक्ष प्रश्न क रहल छथि **कुमार अनिल/आशीष झा**

नेपाल क कुसहा मे कोसीक तटबंध टूटलाक बाद जे तबाही भेल, ओकर छाप दिमाग पर स भ सकैत अछि जे दसो साल बाद हटत, मुदा दिलो-दिमाग पर हटबा मे एकरा पता नहि कतेक पीढ़ि बीत जाइत। सच पूछू त मिथिलाक लोक कोसी के शोक कहब छोड़ि देने छल। जे कोसीक कोप देखने छलाह, ओ सेहो बिसरी गेल छलाह। ओना त बिहार मे बाढ़ वार्षिक आयोजन अछि, मुदा पिछला प्रलय 1953 मे आइल छल। ओकर बाद बिहार मे पहिल बेर बाढ़ मुक्ति आंदोलन भेल छल। जाहि मे तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू कहने छलथि जे कोसीक कहर आब आओर बर्दाश्त नहि केल जाइत। नेहरूक प्रयास स कोसीक ऊपर बांध बंधबाक काज शुरू भेल। जे आइ धरि पूरा नहि भ सकल अछि। 2008क बाढ़ बिहार खास तौर पर मिथिला लेल कहर छी। मिथिला एक बेर फेर 1953 मे लौट गेल। अखबार मे रोज-रोज कहानी छपि रहल अछि। दुनिया भरि स मदद आबि रहल अछि। दिल्ली आओर कोलकाता मे आहिना बिहारक नाम पर भीख (चंदा) मांगल जा रहल अछि, जेना 1956 मे प्रदर्शित फिल्म 'जागते रहो' मे राज कपूर बिहार क बाढ़ लेल कोलकाता मे चंदा वसूल करैत छथि। सब किछु इतिहास मे लौट गेल। वर्तमान मे बची गेल त केवल उम्मीद जे कहियो पूरान नहि होइत अछि।

बिहार अपन राजनीतिक सक्रियताक लेल जानल जाइत अछि। बाढ़ मे सेहो राहत आ राजनीति दूनू संग-संग चलि रहल अछि। पहिल बेर मुख्यमंत्री नीतीश कुमार रक्षात्मक भूमिका मे छथि। कतेक मास स मौकाक फिराक मे बैसल राजद सुप्रीमो लालू प्रसाद नित्य नीतीश पर हमला बाजि रहल छथि। लालू नीतीश क सामने चुनौति राखि रहल छथि। लालू कहैत छथि जे हिम्मत छैंन त नीतीश पीड़ितक बीच जाउथ। नीतीश बाढ़ ग्रस्त इलाकाक हवाई सर्वेक्षण केलाक बाद कहलथि जे इ प्रलय थीक। लालू सेहो बाढ़ ग्रस्त क्षेत्रक दौरा केलथि, कहलथि जे प्रलय आनल गेल, इ पूरा सरकारक लापरवाहीक नतीजा थीक। लालू लापरवाहीक पक्ष मे सबूतक लंबा सूची देखा रहल छथि। नीतीश अपन मंत्री आओर अधिकारिक कुकर्म पर चुप छथि। कहबा लेल तत्काल किछु नहि छैन। कार्रवाई क नाम पर मधेपुराक डीएम बदलि देलथि। कोसी प्रोजेक्ट आ बराजक जिम्मा रखनिहार अभियांता आ पदाधिकारी लोकनिक निलंबन सरकारी सक्रियताक शपथ खेबालेल उदाहरण अछि। प्रलय बनाम लापरवाही क बहस मे नीतीश कमजोर भ चुकल छथि। हुनका लग आब बचबा लेल मात्र एकटा तर्क छैन जे इ समय राजनीति करबाक नहि अछि। लालू सेहो एलान क चुकल छथि जे राहतक काज खत्म भेला पर असली राजनीति शुरू करब। मुदा इ सवाल जनता लग मुंह बौने अछि, जे पिछला पचास साल स एहि मुद्दा पर राजनीति भ रहल अछि। निदानक स्थान पर कहर बढ़ल जा रहल अछि। एहन मे फेर निदानक बदला मे राजनीतिक उद्घोष बाढ़क हल निकालि सकत आओर अगिला साल बाढ़ स मुक्ति भेट सकत। दरअसल, बाढ़ तीन दौर मे बांटल जा सकैत अछि। पहिल दौर मे बाढ़ग्रस्त इलाका स लोक के बाहर निकालब प्रमुख छल। दोसर दौर मे हुनका सब लेल राहतक इंतजाम करब प्रमुख छल आओर तेसर आ अंतिम दौर पुनर्वासक अछि, जे मार्च स शुरू होइत। पहिल दौर मे बिहारक तेसर ध्रुव पासवान पछुआ गेलाह। पहिल दौर मे लालू असगर नीतीश पर भारी पड़लाह, मुदा दोसर दौर मे पासवान सेहो सक्रिय भ गेलाह। लालू रेलवे स्टेशन पर शिविर लगउलथि, त पासवान इस्पात मंत्रालयक सहयोग स सुपौल मे सात टा स्वास्थ्य शिविर शुरू केलथि अछि। लालू आ पासवान दूनू गोटे नीतीश पर हमला जारी रखने छथि। नीतीश लेल सबस पैघ समस्या हुनकर मंत्री छथीन, जे शिविरक उद्घाटन लेल मारामारी मचौने छथि।

नीतीश पहिल दू दौरक नाकामी क पूर्ति तेसर दौर मे करय चाहैत छथि। जे पुनर्वास क अछि आ मार्च तक शुरू होइत। नीतीश मानैत छथि जे ओ पहिल दू दौर से कठिन दौर अछि आओर हुनका लेल इ चुनौति अछि। बिहारक मुख्यमंत्री बनलाक बाद नीतीशक इ सबस पैघ परीक्षा छी। पहिल दू टा दौर स साफ भ चुकल अछि जे मंत्री आ पदाधिकारी तेसर दौर लेल कोनो विशेष तैयारी मे नहि छथि। पूरा तंत्र शिथिल आ कमजोर अछि। बिहार मे राज्यक भूमिका पर बहस चलैत रहल अछि। विदेश मे रहनिहार एकटा बिहारीक गप आइ स्मरण आबि रहल अछि जे बिहार मे ओकर राज्य आ तंत्रक गरिमा आ भूमिकाक खत्म भेनाइ राज्यक विकास लेल सबस पैघ बाधा मानैत दलाह। राजदक शासन समाप्त भ चुकल अछि, मुदा राज्य मे तंत्रक चालि आ मानसिकता मे कोनो बदलाव देखबा मे नहि आबि रहल अछि। भ्रष्टाचार मे लिप्त आ जनता स ऊपर रहबाक प्रवृति नीतीश क मंत्री मे ओहिना छैन जेना राजदक शासन काल मे हुनकर मंत्री मे छल। नीतीशक लाख चाहला पर कियो जनताक सेवक बनबाक प्रयास तक नहि केलक सब जनतो ऊपर रहबाक प्रयास मे लागल रहल। पदाधिकारी सेहो अपन जिम्मेदारी स भागल फिरैत छथि। एहन मे नीतीश कुमार लेल असंभव सन दावा अछि जे बिहारक इतिहास मे सबस पैघ पुनर्वास कार्यक्रमक सफलातापूर्वक भ सकत। नीतीश अवश्य अपन मशीनरी स काहिल लोक के दूर क रहल छथि, मुदा एकर संख्या एक-दू टा मे नहि अछि। एकर बावजूद अगर नीतीश काहिल क छंटनी करबा मे सफल भ गेलाह त चुनौतीक मुकाबला करबा योग्य भ जेताह, वर्ना लालू आ पासवान आंदोलनक शुरुआत करबा लेल तैयार छथि। नीतीश इ जनैत छथि जे ठेकेदार स अधिकारी तक सब राहत आ पुनर्वास मे लूटबा लेल तैयार बैसल छथि। अगर फेर कोनो संतोष झा सन ठेकेदार आ गौतम गोस्वामी सन जिलाधिकारी पैदा भ गेल त नीतीशक सपनाक संग-संग ओ तमाम बिहारीक सपन चकनाचूर भ जाइत जे नीतीश स उम्मीद केने छथि।

पूर्णिया हवाई अड्डा पर मूलभूत सुविधाक घोर अभाव अछि, एकर बावजूद एहि ठाम स राहतक काज सफलता पूर्वक संपन्न भ रहल अछि।

कोसी नहि, हम सब छी जिम्मेदार

अमिताभ अग्निहोत्री

यद्यपि इ अवसर कसूरवारक शिनाख्तक नहि अछि, मुदा तहियो जल प्रलय मे डूबैत–हेलैत बिहारक चीख स इ अग्रेय प्रश्न जरूर सुनाइ दैत अछि जे कि एहि महा त्रासदीक लेल मात्र कोसी जिम्मेदार छथि। या फेर ओ तंत्र आओर व्यवस्था सेहो, जाहि पर बिहारक एहि श्राप स जेतेक संभव भ सकेय ततेक सुरक्षा करबाक जिम्मेदारी छैक। बिहार, खास तर मिथिला लेल कोसीक प्रकोप नव नहि थीक। बिहारक भाग्यक संग इ सदियो स नत्थी भ चुकल अछि। मुदा सवाल इ अछि जे सब सालक भांति एहि साल सेहो एहि दुर्भाग्यग्रस्त राज्य स जे सूचना आबि रहल अछि, समूचा राष्ट्र लेल त लाजक विषय थीके, संग–संग हमर संवेदनाहीनता आओर निष्ठुरता के सेहो रेखांकित करैत अछि। पता नहि पिछला कतेक वर्ष स कोसीक पाइनक उतार–चढ़ाव पर नजरि रखबा लेल लगाउल गेल यंत्र खराब पड़ल अछि। कहबा लेल जरूर कंट्रोल रूम अछि, मुदा ओकरा कंट्रोल करबा लेल कोनो अधिकारी मुश्तैद नहि रहैत छथि। एकटा इ असगर सच एहि राज्यक शासनतंत्रक मुंह पर कालिख पोतबा लेल काफी नहि अछि। इ तथ्य कि राज्यक ओ कान, जेकरा चेतावनी सुनबाक जिम्मेदारी भेटल छल, लगातार ओहि चेतावनी के अनसुना करैत रहल, जे कोसीक कोपक आहट बता रहल छल। राज्य मे जारी एहि मृत्यु संघर्षक लेल ओ कान कि कोसी स कम जिम्मेदार अछि।

बिहारक ललाट पर कोसी जेतेक दुर्भाग्य लिखलक अछि, ओहि स कतेको बेसी त हम सब लिखलहूं अछि। ओ सत्ता आ शासन लिखलक अछि, जेकरा पर एहि गरीब आ पिछड़ल राज्यक सुरक्षा आ तरक्कीक जिम्मेदारी अछि। इतिहास गवाह अछि जे नेता व नौकरशाह लेल कोसीक इ कोप वार्षिक उगाहीक एकटा साधन बनि चुकल अछि आओर जहिया तक इ साधन बनल रहत, तहिया तक कोनो नेता आ नौकरशाहक रुचि एहि आपदा स निबटबा लेल कोनो प्रकारक स्थाई उपाय तक नहि पहुंचत। काशीक दशाश्वमेध घाट पर बैसल डोमक लेल आर्थी शोक नहि, बल्कि उल्लासक विषय होइत अछि। कोसीक कोप सेहो किछू गोटे लेल ओहने उल्लासक विषय अछि। कोसी कोनो पहिल बेर अपन रूप नहि देखेलक अछि। ओकर तांडव स हम सब परिचित छी। फेर आखिर आइ तक एहन कोनो तंत्र किएक नहि विकासित भ सकल जे आपता एला पर बिना समय गवौने सक्रिय भ सकै आ क्षतिक मात्रा न्यूनतम करबा मे सक्षम भ सकै। एहि प्रश्नक उत्तर 'सुशासन बाबू' क ईमानदारी पर प्रश्न उठबैत अछि। एहन मे अमेरिका क 'टाइम' पत्रिका मे सुर्खि बटोरी नाम कमा चुकल गौतम गोस्वामी सन नौकरशाहक बाढ़ राहतक नाम पर लूटक कारोबार मे संलिप्त रहब, शायद बिहारक लेल कोसी स पैघ श्राप अछि। बिहार केवल लालू, नीतीश आाओर पासवान सन नेताक सियासी बाजीगरी क मैदान नहि थीक। लग्जरी गाड़ी मे बैस गामक बाट पर टीवी कैमराक सामने मे बाढ़ पीड़ित क हाथ मे पांच–पांच सौ टका थमा अपन जय–जयकार कनिहार नेता सच कहू त सप्तकोसी स बेसी एहि राज्य के घाव देलथि अछि। त्रासदीक एहि

> बिहार केवल लालू, नीतीश आाओर पासवान सन नेताक सियासी बाजीगरी क मैदान नहि थीक। लग्जरी गाड़ी मे बैस गामक बाट पर टीवी कैमराक सामने मे बाढ़ पीड़ित क हाथ मे पांच-पांच सौ टका थमा अपन जय-जयकार कनिहार नेता सच कहू त सप्तकोसी स बेसी एहि राज्य के घाव देलथि अछि। त्रासदीक एहि गहन क्षण मे राज्यक प्रमुख नेता एकर गंभीरता, समझ आओर संवेदनशीलताक परिचय नहि द रहल छथि, जे आइ मानवीयताक न्यूनतम कसौटी अछि। अंट-संट आरोप आओर फालतूक दंभ स भरल उक्ति राहत काज सन पुण्य काज पर सेहो

कुमुद सिंह

लोकल एलिट स ग्रस्त बिहार

पढ़ल-लिखल लोक बेसी खतरनाक अछि बिहार लेल

बिहार में बाढ़ कोनो नव घटना नहि अछि। सब सालक भांति एहि साल बांध सांझ खन टूटल राति मे आंगन मे पाइन आइल आ भोर तक सामान सहित पूरा गाम बांध पर पहुंच चुकल छल। जे बांध तक नहि पहुंचल से कोनो कान सुरक्षित मचान पर पनाह ल लेलक। घंटा- पहर नहि बल्कि सप्ताह बाद प्रशासन बाढ़ पीड़ित तक नहि पहुंच सकल। बांध टूटलाक बादक इ दृश्य छी। जखन बिहार बाढ़ स ग्रस्त छल ठीक आहि समय मे अमरीका मे सेहो तुफान अपन रूप देखा रहल छल। बिहार स बेसी अमरीका मे क्षति भेल। करीब पांच सौ लोक मृत्युक गाल मे चल गेल। करोड़ क करोड़ टका क संपत्ति नष्ट भ गेल, मुदा प्रशासन केकरा कहल जाइत अछि, से देखबा मे आइल। तूफान स दू दिन पूर्व इलाका खाली करबाक घोषणा भ चुकल छल। प्रशासन तुफान स पूर्व राहत शिविर तैयार रखने छल। तुफान स कम-स-कम क्षति हेबाक प्रयास कैल गेल। कहल जा रहल अछि जे प्रशासनक तत्परता स क्षति कम भेल। लोकक जान बचल आ पुनर्वासक काज शीघ्र शुरू भ रहल अछि।

प्रकृति क रूद्र रूप स बचब कठिन अछि, मुदा क्षति कम भ सकैत अछि। बिहार आ अमेरिका मे अंतर इ अछि जे हम प्रलय एलाक बादो नहि सचेत भ सकलहू, आ ओ प्रलय स पूर्व प्रलयक बादक तैयारी क चुकल छलाह। प्रलय रोकबाक ताकत ककरो मे नहि अछि। ओ त एबाक छैक, आउत। तंत्र आ प्रशासन ओकर क्षति स बचेबा लेल तत्पर रहैत अछि। अगर नेपाल मे पदस्थापित अभियंता अपन जिम्मेदारी ठीक स निर्वाह करतथि, त हजारो जान बचि सकैत छल। मुदा एहन नहि भेल। विभागीय पत्र मे विभागीय भाषा स बेसी ओ किछु नहि केलथि। सरकारी फोन कटल छल, अपन जेब स किया टका खर्च करब। पत्रकार, सामाजिक कार्यकर्ता स किया संपर्क करब। बांध टूटत, लोक दहैत, मरघट पर मेला लागत, हमरा कि, नीतीश बाबू, लालू बाबू आ पासवान जी दुनिया लग उत्तर देताह। किछु एहने विचार छैन कोसी तटबंधक रक्षा लेल पदस्थापित अभियंता सबहक। निलंबनक बाद अपन जेब स टका लगा ओ पत्रकार सब स संपर्क करैत छथि। अति गोपनीय विभागीय पत्र पत्रकार लेल उपलब्ध करबैत छथि। सामाजिक कार्यकर्ता स आंदोलन चलेबा लेल गुहार करैत छथि। सरकार पर सबटा दोष द अपन गैर जिम्मेदारीपूर्ण व्यवहार पर परदा डालबाक प्रयास करैत छथि। सवाल उठैत अछि जे ओ सरकारक अंग दलाह। जे पत्रकार स आइ संपर्क क रहल छथि, जे दस्तावेज आइ मीडिया लेल उपलब्ध करा रहल दथि ओ पहिने किएक नहि। लोकक जान गेलाक बाद किएक, अपन गला मे फंदा गेलाक बाद किएक। नेता आ प्रशासन पर आरोप तवाही स पूर्व किएक नहि लागल। लाखो घूस द कोसी बराज पर पदस्थापन करेबाक पाछु की कारण अछि। कोनो नेता स बेसी इ अभियंता आ पदाधिकारी बाढ़ लेल जिम्मेदार छथि, जे ज्ञान आ अधिकार हेबाक बावजूद कोनो प्रयास नहि करैत छथि। सैकड़ों लोकक जान गेलाक बादो हिनकर ज्ञान नहि खुलैत अछि, हिनकर मुंह आ ज्ञात तखन खुलैत अछि जखन हिनका पर कार्रवाई होइत अछि। पिछला पांच दशकक अनुभव बता रहल अछि जे बिहार नेताक कारण नहि तबाह भेल। बिहारक सबस पैघ दुश्मन बिहारक लोकल एलीट (स्थानीय अभिजात्य वर्ग) छथि। ओ अपन जिम्मेदारीक निर्वाह त बिसरि गेलाह, नेता पर सबटा दोष लगा अपन विद्वान हेबाक परिचय दैत रहैत छथि।

> प्रभाव डालि रहल अछि। इ संभव अछि जे कोसीक कोप पर देर-सवेर नियंत्रण भ जे, मुदा एहि राजनेता लोकनि मे संवेदना अनवा लेल कोनो तंत्र विकसित भ सकत तेकर आशा नहि अछि।

गहन क्षण मे राज्यक प्रमुख नेता एकर गंभीरता, समझ आओर संवेदनशीलताक परिचय नहि द रहल छथि, जे आइ मानवीयताक न्यूनतम कसौटी अछि। अंट-संट आरोप आओर फालतूक दंभ स भरल उक्ति राहत काज सन पुण्य काज पर सेहो प्रभाव डालि रहल अछि। इ संभव अछि जे कोसीक कोप पर देर-सवेर नियंत्रण भ जे, मुदा एहि राजनेता लोकनि मे संवेदना अनवा लेल कोनो तंत्र विकसित भ सकत तेकर आशा नहि अछि। जातरीय उन्माद स प्राणऊर्जा पौनिहार आओर अपराधीक बैसाखीक मदद स सत्तारोहण करबा मे सफल इ नेता मात्र बिहार नहि देशक लेल दुर्भाग्यक प्रतीक छथि।

...बिहार किया कहि, मात्र बिहार कहब गलत अछि, इ कहू जे भारत, जेकर एकटा हिस्सा मे 40 लाख लोग पिछला 17 दिन स जीवन आओर मौतक बीच संर्घष करि रहल अछि, ओहि देशक केंद्र सरकार विकास दर क आंकड़ा देखि आत्ममुग्धता क चरम शिखर पर आसीन अछि। ओकरा लग खुश हेबा लेल विकास दर अछि त चिंता करबा लेल परमाणु करार। रायसीनाक पहाड़ी पर स्थित सत्ता-केंद्रक नजरि मे कोसी स उपजल संकट कोना समाउत। करार पर ओ आइएइए मे सौ टा स बेसी देश स अपन आग्रह मनबा लइत अछि। एनएसजी मे 45 टा देश स अपन गप मनबेबा लेल राति-दिन एक केने अछि, मुदा कोसीक कोप कम करबा लेल पिछला 60 साल स अपन पड़ोसी आ मित्र राष्ट्र नेपाल स गप नहि करि सकल अछि। राजी करब या दबाव देब त दूरक गप अछि। हिन्दुस्तानक हुकूमत लेल बिहार, बाढ़ आओर एकर निदान कहियो प्राथमिकता सूची मे नहि रहल। आपदा प्रबंधनक नाम पर बनल राष्ट्रीय प्राधिकरण पिछला दू साल स कोनो बैठक नहि करि सकल अछि। बाढ़ सब साल तीन हजार करोड़ टकाक क्षति पहुंचा रहल अछि। मनुख आ माल-जालक जानक क्षति अलग, मुदा सत्ता पर बैसल नेता आओर देश चलेबा लेल नियुक्त नौकरशाहक चिंता सूचीक परिधि मे इ आइ धरि नहि जगह बना सकल अछि। बाढ़क नाम पर सब साल करोड़ो टका खर्च भ रहल अछि। इ टका क उपयोग केहन भ रहल अछि, इ ककरो स नुकाइल नहि अछि। राहतक गोरखधंधा सत्ताक शिखर पर बैसल नेता आओर प्रशासनक मुखिया नौकरशाह लोकनि लेल पसंदीदा काज रहल अछि। नदी जोड़बा लेल एहि स्तर पर कोनो प्रयास नहि भ रहल अछि। हम सब सेहो विकल्प पर चर्चा करबा स बेसी सरकार पर सबटा दोष द अपन दायित्वक निर्वाह करबा मे विश्वास रखैत छी। मुदा एतबा स हम अपन दायित्व स बरी नहि भ सकैत छी। बिहारक पीड़ा सरकारी शब्दकोश मे 'राष्ट्रीय आपदा' मात्र भेला स देशक पीड़ा नहि बनि सकल। खेदक संग कहि रहल छी जे बिहारक पीड़ा अपन पीड़ा मानि ओकर निराकरण करबा लेल जे हेबाक चाही, से शेष भारतक दिस स देखबा आ सुनबा मे नहि भेट रहल अछि। बिहार पूरा देशक अछि, एहि संबंध स बिहारक पीड़ा पूरा देशक पीड़ा बनबाक चाही, मुदा जखन धरि एहन नहि होयत, तखन धरि हम आखिर कोना कहू जे हम एहि राष्ट्रीय आपदा मे बिहारक लेल गंभीरता आओर संवेदनशीलताक संग जुड़ल छी।

अमिताभ अग्निहोत्री 'देशबन्धु' दिल्ली संस्करणक स्थानीय संपादक छथि।

सवाल फेर एक बेर ओतहि अछि जे बिहार मे बाढ़ सब साल अबैत अछि, त फेर दहेलाक बाद परिचर्चा किएक भ रहल अछि। इ चर्चा त पहिने हेबाक चाहि, भेलाक बाद द मूर्ख सेहो चर्चा मे भाग ल लैत, पहिने भेला पर क्षति सेहो कम होएत आ ज्ञानक सेहो लाभ भेटत।

कोसी बांध पर पदस्थापित निलंबित अभियंता आइ कहि रहल छथि जे ओ सरकार लग पत्र पठा देने रहथि जे बांध पर खतरा अछि। अगर हुनका सरकार लग स कोनो संदेश नहि भेटल त हुनक फर्ज छल जे ओ किछु आओर प्रयास करितथि। मुख्यमंत्री आओर प्रधानमंत्री तक स गुहार करितथि। पत्रकार आ सामाजिक कार्यकर्ता स कहितथि। आखिर सवाल 40 लाख लोकक छल। कोनो एहन व्यक्ति क माफी कोना भ सकैत अछि, जेकरा इ ज्ञान हो कि 40 लाख लोक जल प्रलय स ग्रस्त भ सकैत अछि आ ओ व्यक्ति घर मे सरकारी आदेशक बाट तकैत सुतल रहे। निसंदेह सरकार एकरा लेल जिम्मेदार अछि। जलसंसाधन मंत्री पर आपराधिक मुकदमा हेबाक चाही, मुदा ओ अभियंता लेल सख्त स सख्त सजाक प्रावधान हेबाक चाही जेकरा सब किछु पता छल, मुदा ओ चुप-चाप तमासा देखैत रहल। कोनो अपराधिक अपराध स कहीं बेसी गंभीर कोनो पुलिस या कानूनक जानकार द्वारा कैल गेल अपराध के मानल जाइत अछि। नेता आ पटना मे बैसल नौकशाह स कहीं बेसी तटबंध पर पदस्थापित ओ अभियंता छथि, जे तटबंधक रक्षा आ सड़कक मरम्मत मे कोनो अंदर नहि मानैत छथि। हुनका लेल दूनू बराबर छैन। बांध टूटब आ सड़क टूटब हुनका एक एकटा प्रक्रिया मात्र छैन जेकरा लेल हुनका लग रटल-रटाइल स्पष्टीकरण सेहो रहैत छैन, जे मुख्यालय लग सूचना पढा देने रही, ओहि ठाम स कोनो कार्रवाई नहि भेल ताहि खातिर लाखो लोक दहा गेल। सभ्य समाज मे एहन पढ़ल-लिखल लोक स नीक अछि, जे मूर्ख रहि। कम स कम इ संतोष त रहत जे हमरा एकर ज्ञान नहि छल। अपन मकानक दीवार स मोहल्लाक नाला बंद करबा स ल के राहत लेल आयल सामान तक कब्जा करबाक प्रवृति कोनो मूर्ख स बेसी बिहारक लोकल एलिट मे पाउल जा रहल अछि। ई ओ जमात अछि जे भ्रष्टाचार रूपी पाप सबस बैसी करैत अछि आ सबस बैसी आवाज मे कहैत अछि जे बिहार मे भ्रष्टाचार बहुत भ रहल अछि।

मंदिर मे रोजा, मस्जिद मे तीज

ध्वस्त भेल धर्मक दीवार, रहमानक थारी मे तीज सजल, रामक लोटा स टूटल रोजा

विपत्ति समाज लेल जुड़बाक माध्यम होइत अछि। बिहार मे बाढ़ एहन समय मे आइल जखन कश्मीर मे हिन्दू आ मुस्लिमक बीच टकराव छल आओर ओडिशा मे ईसाई आ हिन्दू एक-दोसरा लेल दुश्मन बनि रहल छल। एहन मे बिहार सद्भावनाक एकटा एहन महल बना रहल छल जाहि मे धर्मक कोनो दीवार नहि छल। रहमानक थारी मे सीता देवीक तीज सजल छल आओर रामक लौटा स अफरोज रोजा तोड़बा लेल हाथ-मुंह धो रहल छलाह। मंदिर आ मस्जिद सामान्य परिस्थिति मे अलग-अलग लोक लेल बनाउल गेल अछि। विपत्ति मे मंदिर मे खुदा भेट जाइत छथि आ मस्जिद मे भगवान। बाढ़ स लाखों घर तबाह भ गेल, जीवनक सबटा सहारा बहि गेल। तबाहीक एहि सैलाव मे अगर किछु नहि बहल त ओ छी बिहारियत। लाख चाहलाक बावजूद बिहार मे एखनो इंसानियत जीवित अछि। ओकरा कोसी आओर समृद्ध केलथि अछि।

बिहारक बाढ़ किछु पत्रकार लेल साहित्य लिखबाक एकटा मौका द देलक अछि। बिहारक कष्ट देखबाक हुनक नजरिया अद्भुत अछि। खास तौर स दिल्ली स गेल पत्रकार त एकरा एकटा कलात्मक कहानी बना बेच रहल छथि। हुनका लेल बिहार दृश्य केनवास पर बनाउल गेल कोनो पेंटिग सन अछि, जे पूरान चित्रकलाक स्थान पर एहि साल नव रूप स टांगल जाइत। जे कहियो बिहार नहि गेल, कोसीक दर्शन नहि केलक। बिहारक सामाजिक परिस्थिति स परिचित नहि अछि। एहिसाल बिहार पर विशेषज्ञ बनि लिखलक, मानू ओ बिहारक माटी-पाइन स जुड़ल अछि। बिहार क समाज सामान्य नहि अछि। ओ निराश भ आत्महत्या नहि करैत अछि। ओ मंदिर-मस्जिद लेल एक-दोसरक जान नहि लइत अछि। बाढ़ग्रस्त इलाकक किछु दृश्य देखेबाक प्रयास केलथि अछि एकटा बिहारी पत्रकार

बुझबा मे नहि अबैत अछि, जे गप कतय स शुरू करू। निलोफर क रोजा स कि आरतीक तीज स। संघ परिवारक कैंप मे अल्पसंख्यक नमाज स कि चीख- पुकार क बीच स अबैत किलकारी स। पटना जक्शन पर भटकैत अमरकांत स कि इंटरसिटी क ब्रेकभान स राहत ल जा रहल रामू स। सहरसा स्टेशन पर अपन बेटी संग बौआइत रामधन स कि मधेपुरा क खटालक ओहि बच्चा स जे एक ग्लास दूध लेल आइ दुत्कारल जा रहल अछि।

दर असल एहि ठाम एकटा जिनगी एकटा कहानीक खंड अछि। ओ कोनो आदमी नहि अछि, मात्र खंड अछि जेकर सब किछु खंड-खंड भ चुकल अछि। एकटा पत्रकार लेल इ केवल आलेख अछि, जेकरा सुनैत जाउ आओर केवल लिखैत जाउ। मुदा एना ककरो जिनगी बदलि जाइत अछि, न सुनल छल आ न देखल छल। अतेक दुख त कोनो माइ नहि द सकैत अछि, फेर कोसी केना देलक? हालांकि इ पीड़ा जिजीविषा सेहो सिखबैत अछि। मुदा सबस पैघ प्रश्न अछि जे इ कोनो जीवन अछि। जीवनक परिभाषा बाद मे ताकब, एखन एकटा एहन समाज स भेंट करबाक समय अछि जे भीतर स काइन रहल अछि आओर बाहर स सामान्य देखबा मे आबि रहल अछि।

जिला स्कूल मे संघ परिवार क कैंप लागल अछि। अद्भुत दृश्य। संघ परिवारक नेता कतार स बैसल छथि। सामने रोजा तोड़बा लेल नमाज पढ़बाक तैयारी भ रहल अछि। मधेपुराक रेश्मा खातूनक बेटी रजिया एहि सब स बेफ्रिक कात मे असगर बैसल अछि। ओकरा भूखक चिंता छैक। बस मुड़ही फांकि रहल अछि। परबाक सलीम अपन परिवारक संग पिछ्ला सात दिन स एहि ठाम अछि। सलीमक अनुसार एहि ठाम कोनो दिक्कत नहि छैक। नमाजक समय भ गेल। के बनत इमाम? बीच स आवाज आइल, रहमान बनि जो इमाम। नमाज शुरू भ जाइत अछि। संघ क नेता अपन गप समाप्त करि चुप भ जाइत छथि।

एहन नेता स आओर की उम्मीद करू

दिनेश चंद्र यादव। जी हां, इ बिहार सरकार मे मंत्री छथि। मुदा यादव जी लेल मंत्रीक परिभाषा किछु अलग अछि। स्कूल भवनक उद्घाटन स ल के मुक्तिधामक शिलान्यास तक मंत्रीक हाथे जं नहि भेल त फेर जनता कोना बुझत कि अहां मंत्री छी। अपन एहने परिभाषा पर मंत्री जी एकटा सरकारी शिविरक उद्घाटन करबाक कार्यक्रम बना लेलथि। समय निर्धारित भेल। शिविर मे किछु इंतजाम भेल नहि भेल, रंग-बिरंगी झार अवश्य लगाउल गेल, जेना कोनो उत्सव छी। भूख आ प्यास स व्याकुल जनता शिविरक गेट पर समय स जमा भ गेल। रौद अपन विकराल रूप लेने पहुंच गेल छल। मुदा समय पर जौं मंत्री जी पहुंच जेताह, त मंत्री की भेला। अपन निर्धारित कार्यक्रम स चारि घंटा बाद मंत्री जी पहुंचलाह। लाज-धाक त्यागी चुकल बिहारक नेता सात दिन स भूखल जनता लग फीता कटबा मे कनियो नहि धखेलथि। करीब आधा घंटाक नौटंकी भेलाक बाद आम जनता लेल शिविरक गेट खोलल गेल। तीन मंजिला एहि शिविरक संबंध मे बीडीओ संजय कुमार कहैत छथि जे एहि ठाम 475टा पीड़ितक समुचित व्यवस्था अछि। एकरा शीघ्र मेगा शिविर मे बदलबाक विचार अछि। संजय बाबूक हिसाब स सरकारी धनक समुचित रूप स उपयोग भ रहल अछि, मुदा ओ इ पूछला पर पसीना स नहा गेला कि झालरक खर्च आखिर राहत शिविरक कोन मद मे देखाउल जा रहल अछि। आखिर नीतीश कुमार अपन मंत्री के एतबा त बुझा दथि जे इ उद्घाटनक शौक पूरा करबाक समय नहि थीक आ पदाधिकारी सेहो झालर लटका एकरा एकटा उत्सव नहि बना देबाक प्रयास करथि। इ एकटा शोक अछि आ शोक सन व्यवहार हेबाक चाहि।

मौलाना मोहम्मद इशूक सहरसा मे मदसरा चलबैत छथि। इशूक साहब क मदरसा एखन बाढ़ राहत शिविर मे परिवर्तित भ गेल अछि। एहि ठाम लगभग 1500 हिन्दू परिवार शरण लेने अछि। मदरसाक एकटा कोन मे सोनी बैसल अछि। बापक नाम- बिंदेश्वर यादव। सोनीक दू टा बहिन कोसीक धार मे बहि गेल। हांड़ कंपा दइवाला दास्तान अहि ठाम एकटा नहि अछि। ओकर सूची काफी लंबा अछि। शैरून खातूनक पति इस्माइल लापता अछि। दू सालक बेटीक संग शैरून एहि मदरसा मे अछि। ओ रोजा रखने अछि। ओ खुदा स आओर किछु नहि मांगी रहल अछि, ओकरा मात्र इस्माइल चाही। राहत कैंप बनि चुकल एहि मदरसा मे एकटा शैरून नहि अछि। शैरून त प्रतीक बनि चुकल अछि। गौरी दाइ आइ प्रसन्न छथि। ओ तीजक व्रत रखने छथि। सात साल बाद हुनकर पति हरून हुनका लग आबि रहल दथि। फोन पर गप भ चुकल अछि। सांझक गाड़ी स पहुंचताह। हारून सात साल स पंजाब मे कमा रहल छ्लाह। गाम मे बाढ़क सूचना पाबि ओ तत्काल ट्रेन स बिहार लौट रहल छथि। सात बरखक बाद रिंकू, ममता आओर पप्पू अपन बापक मूंह देखत। रमेश झा महिला कॉलेज एखन बंद अछि। एहि ठाम मेगा शिविर लागल अछि। हजारक करीब लोक एहि ठाम पनाह लेने अछि। कियो अपन बाप त कियो अपन संतानक वियोग मे चित्कार मारी छाती पीट रहल अछि। वियोगक एहि माहौल मे दू टा नव जिनगी स भेंट होइत अछि। कंचन देवी परसू आ नीलम झा आइ क्रमशः बेटा आओर बेटीक जनम देलथि अछि। डॉ कल्याणी सिंह कैंप मे आयल छथि। रेश्माक डिलेवरी लेल सब परेशान अछि। पूरा कैंप एकटा आओर किलकारीक बाट तकैत अछि। शायद किलकारीक शोर ममताक चीख कें संतुलित करत। आखिर ममताक गोदी कोना भरत, के कहत हुनका स जे हुनकर चीराग अनुराग कोसीक धार मे बहि गेल। लाश त नहि भेटल। कैंप मे हल्ला भेल, रेश्मा के बेटा भेल। ममता नोराइल आंखि स रेश्माक बच्चा लग चल गेलीह।